International Research Journal of Management and Commerce
ISSN: (2348-9766)
Impact Factor 5.564 Volume 5, Issue 5, May 2018
Website- www.aarf.asia, **Email** : editor@aarf.asia , editoraarf@gmail.com

अकेलापन एक अभिशाप

(सोनिया देवी)

एम फिल शोधकर्ता, भगवंत विश्वविधालय अजमेर राजस्थान

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। वह समाज तथा परिवार में रहकर ही अपने जीवन को सार्थ बना सकता है। अकेलापन जीवन का सबसे बड़ा अभिशाप है। 'अकेली' कहानी में एक ऐसी ही नारी का चित्रण किया गया है। जो पारिवारिक मोह–माया में लिप्त थी। रिश्तों की मर्यादा का पालन करने में बड़ी तत्परता दिखाती है। परन्तु परिणाम में उसे कुछ नहीं मिलता है। 'अकेली' कहानी में जब सोमा बुआ के एकमात्र बेटे की मृत्यु हो जाती है तो वह बिल्कुल अकेली पड़ जाती है। पति भी पुत्र की मृत्यु के बाद सन्यासी बन जाता है। वह तीर्थवास ले लेता है। सोमा–बुआ अपने इस अकेलेपन से छुटकारा पाने के लिए छटपटाती है।

समाज में कई ऐसे लोग हैं जो अपने अकेलेपन को दूर करने के लिए दूसरों के सुख–दुःख में शामिल होते हैं। सोमा बुआ भी अपने ''अकेलेपन के अभिशाप'' से बचने के लिए पास–पड़ोस के लोगों के सुख–दुःख में शामिल होती रहती है। ''भट्ठी पर देखों तो अजीब तमाशा समोसे कच्चे ही उतार दिए और इतने बना दिए कि दो बार खिला दो और गुलाब–जामुन इतने कम कि

© **Associated Asia Research Foundation (AARF)**
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

एक पंगत में ही पूरे नहीं पड़ें। उसी समय सोमा बुआ ने मैदा छानकर गुलाब जामुन बनाए।'' गद्य–फुलवारी, (''अकेली'', मन्नू–भण्डारी, पृ. 67) इस उदाहरण से यह बात पूरी तरह से स्पष्ट होती है कि सोमा–बुआ अपने अकेलेपन को दूर करने के लिए किस तरह किशोरीलाल के घर मुंडन के अवसर पर स्वंय दावत की पूरी तैयारी करती है। वह पड़ोस के किशोरीलाल के परिवार को अपना ही परिवार मानने लगती है। परन्तु सोमा–बुआ के पति को किसी के घर बिना बुलाए जाने की आदत पसंद न थी। पति की यह बात भी उचित है क्योंकि बिना निमन्त्रण के किसी के यहां जाना अच्छी आदत नहीं, लेकिन इसके लिए सोमा–बुआ के पति भी जिम्मेदार हैं। बुआ के प्रति उनका कठोर व्यवहार ही बुआ को दूसरों के घर जाने के लिए बाध्य करता है।

लेखिका ने सोमा बुआ के माध्यम से यह दिखाने की कोशिश की है कि जो लोग अकेलेपन का शिकार होते हैं तो जब कभी उनका कोई अपना उनके पास रहने के लिए आता है और वह बार–बार उनको रोका–टोकी करे तो उन्हें उनका वहां रहना भी पसन्द नहीं आता है। उसी तरह सोमा बुआ को भी अपने पति का घर आना अच्छा नहीं लगता है। ''अकेली'' कहानी में राधा भाभी के साथ हुई बातचीत से पता चलता है कि ''किशोरीलाल के बेटे के मुंडन में सारी बिरादरी को न्यौता था। मुंडन में बिना बुलाए चली गई थी।'' (पृ. 67) बस इसी बात पर सन्यासी महोदय बिगड़ गए। ''भला बुलावे की क्या जरूरत थी? वह मेरा अपना घर था। वे तो मुझे अपनी मां से कम नहीं समझते है।'' (पृ. 67–68) सोमा बुआ की यह सारी बाते सुनकर राधा उनसे कहती है कि एक मास ही तो सन्यासी ने रहना है। तुम सुन लिया करो। इससे तुम्हारा क्या बिगड़ेगा। (पृ. 68)

अकेलापन आज भी समाज में एक अभिशाप के बरावर माना गया है। इसे दूर करने के लिए लोग तरह–तरह के तरीके अपनाते हैं। सोमा बुआ भी इस उपन्यास में अपने अकेलेपन से इतनी अधिक दुःखी तथा निराश थी कि जब उसे पता चलता है कि उसके देवर के ससुराल वाले यहाँ आकर अपनी लड़की की शादी कर रहे हैं। तो यह बात सोमा–बुआ के लिए सर्वाधिक खुशी वाली बन जाती है। यद्यपि देवर जी को मरे हुए 25 वर्ष हो गए थे। पर बुआ फिर भी इस शादी में शामिल होकर उस रिश्ते को फिर से पुनजीवित करना चाहती थी। सोमा–बुआ यही समझती है कि अगर वह इस शादी में शामिल होगी तो उसका अकेलापन थोड़ी देर के लिए दूर होगा। विवाह में जाने का सोमा–बुआ का उत्साह इन पंक्तियों से व्यकत होता है – ''बुआ ने साड़ी में माँड लगाकर सुखा दिया फिर एक नई थाली निकाली, अपनी जवानी के दिनों में बना हुआ क्रोशिए का एक छोटा–सा मेजपोश निकाला थाली में साड़ी, सिंदूरदानी, एक नारियल और थोड़े से बताशे सजाए, फिर जाकर राधा को दिखाया?'' (पृ. 71) सोमा–बुआ देवर जी के ससुराल से विवाह के बुलावे की प्रतीक्षा कर रही थी। सात बजे के धुँधलके में राधा ने पूछा – ''बुआ सर्दी में खड़ी–खड़ी जहाँ क्या कर रही हो? आज खाना नहीं बनेगा क्या, सात बज गए।'' (पृ. 72) सोमा–बुआ को शादी का बुलावा नहीं आता है। तो वह फिर से अपने अकेलेपन और निराशा की गहरी खोह में डूब जाती है।

न जाने समाज में ऐसे कितने अधिक लोग होंगे जो अपने अकेलेपन से जूझ रहे हैं। कोई भी मानव दुःख एवं अभाव का जीवन नहीं जीना चाहता है।

वह अपने दुःख एवं अभाव को दूर करने के लिए कोई–न–कोई रास्ता निकाल ही लेता है।

मन्नू–भण्डारी ने समाज के प्रति अपना दायित्व समझते हुए अकेलेपन के कारण मनुष्य को किन समस्याओं तथा मुसीबतों का सामना करना पड़ता है, उसी का चित्रण मन्नू–भण्डारी ने इस उपन्यास में किया है। पहले समाज में अकेलेपन की समस्या काफी कम थी। परन्तु आजकल यह समस्या एक अभिशाप बनती जा रही है। आने वाली समस्याओं से अवगत करवाना ही एक अच्छे साहित्यकार का दायित्त्व होता है और इसी दायित्त्व का पालन मन्नू–भण्डारी ने अपने इस उपन्यास के माध्यम से किया है।